www.evidyarthi.in

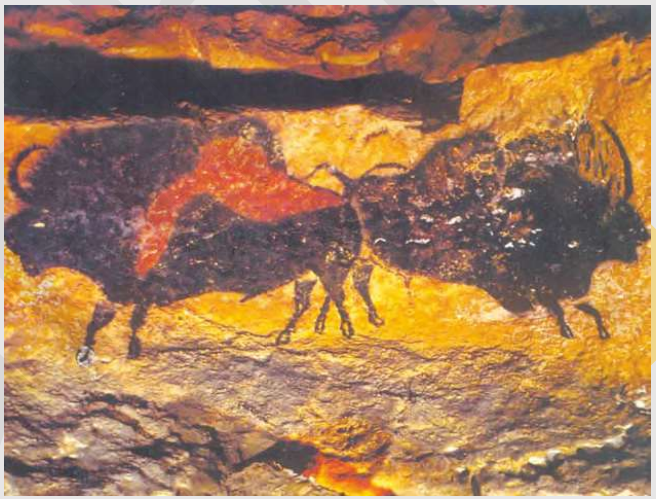

आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक

अध्याय - 2

हमारे अतीत

https://www.evidyarthi.in

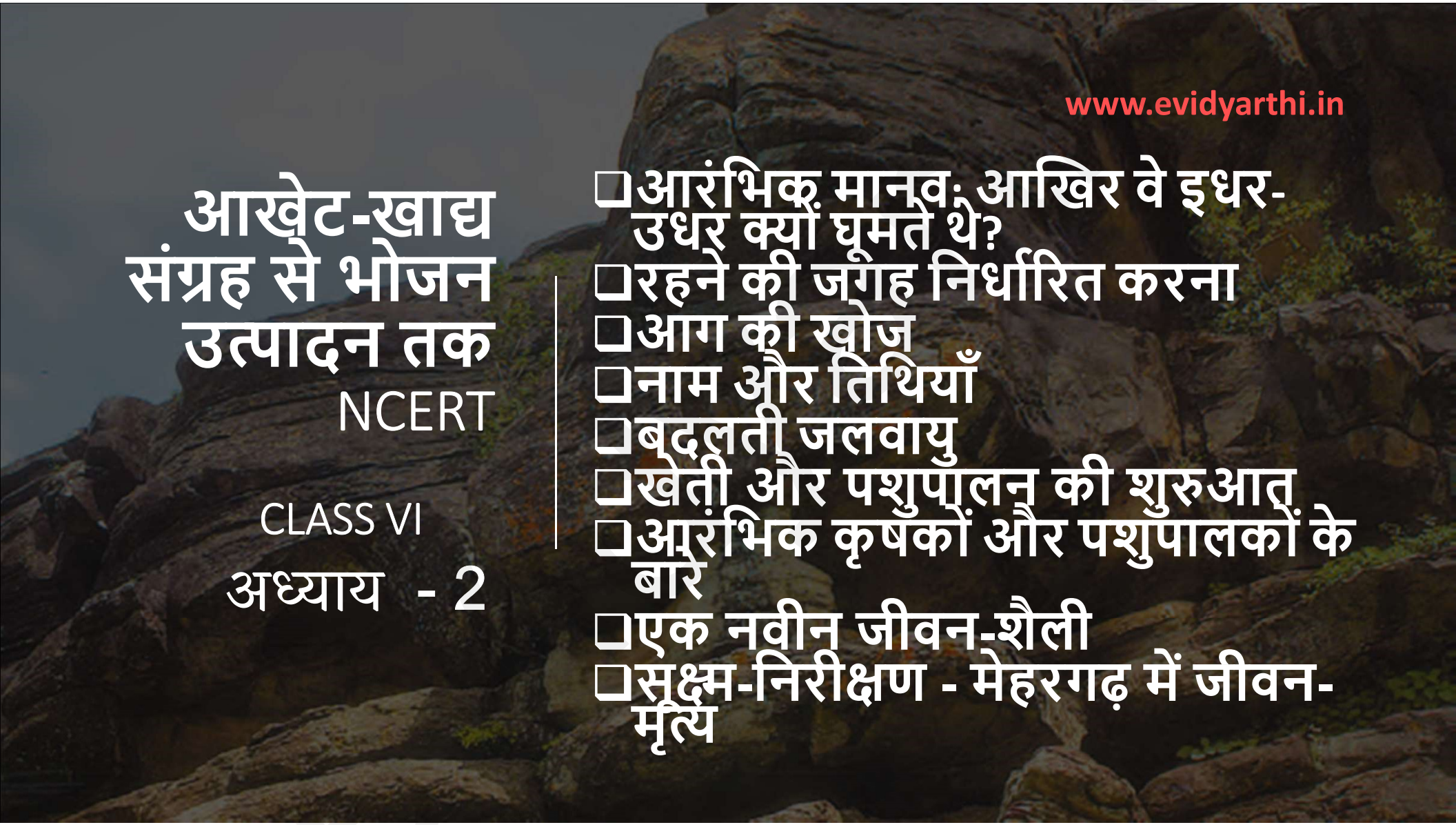

www.evidyarthi.in

आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक

NCERT

CLASS VI

अध्याय - 2

- आरंभिक मानव: आखिर वे इधर-उधर क्यों घूमते थे?
- रहने की जगह निर्धारित करना
- आग की खोज
- नाम और तिथियाँ
- बदलती जलवायु
- खेती और पशुपालन की शुरुआत
- आरंभिक कृषकों और पशुपालकों के बारे
- एक नवीन जीवन-शैली
- सूक्ष्म-निरीक्षण - मेहरगढ़ में जीवन-मृत्यु

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

❑ आरंभिक मानव: आखिर वे इधर-उधर क्यों घूमते थे?

- आजीविका
- प्राकृतिक आपदा
- संग्राहक और शिकारी
- जानवरों के पीछे
- पानी की खोज में
- मौसमी भोजन

www.evidyarthi.in

❑ आरंभिक मानव के बारे में जानकारी

पुरातत्वविदों को मिले उपकरण = पत्थर, लकड़ी, हड्डी के उपकरण जिसका प्रयोग

- शिकार करने के लिए
- छाल उतारने के लिए
- मीट काटना
- मिट्टी खोदना इत्यादि

https://www.evidyarthi.in

CLASS VI CH 2 आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक NCERT

www.evidyarthi.in

पत्थर के औजारों का उपयोग

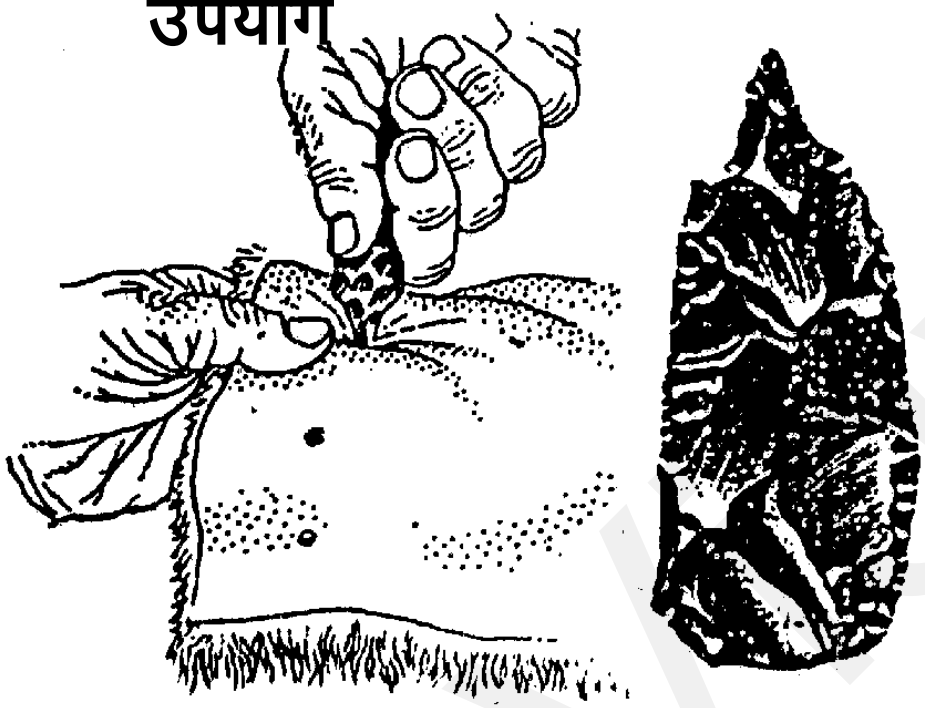

इंसान के खाने योग्य जड़ों को खोदने के लिए किया जाता था

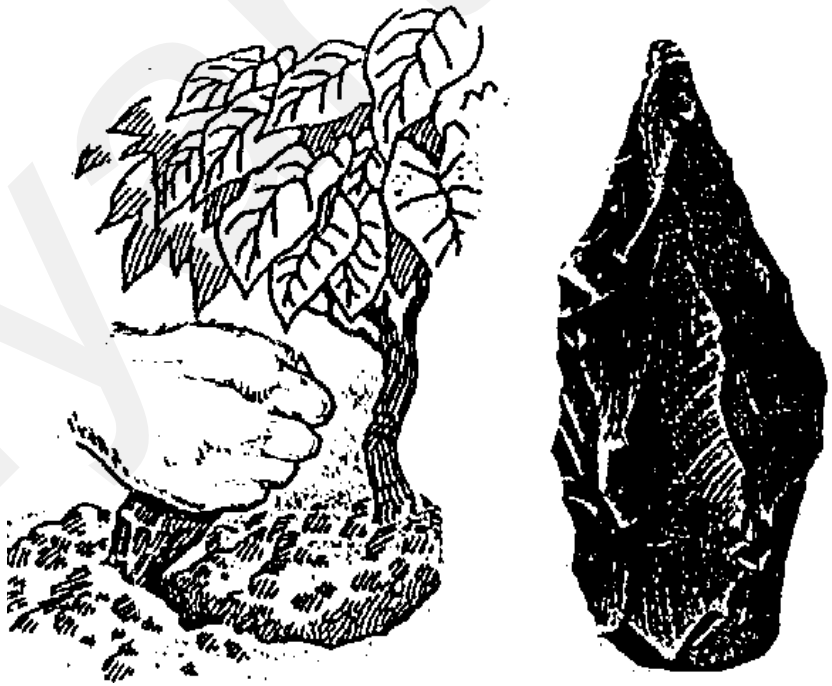

जानवरों की खाल से बने वस्त्रों को सिलने के लिए किया जाता था।

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

❑रहने की जगह निर्धारित करना

- उद्योग सथल - factory site - जहाँ हथियार बनते थे।
- आवासीय सथल - habitation site - जहाँ रहते थे।
-
- आवासीय - उद्योग सथल - रहते +हथियार बनते थे|
-
- पानी + पत्थर + गुफा

https://www.evidyarthi.in

CLASS VI CH 2 आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक NCERT

www.evidyarthi.in

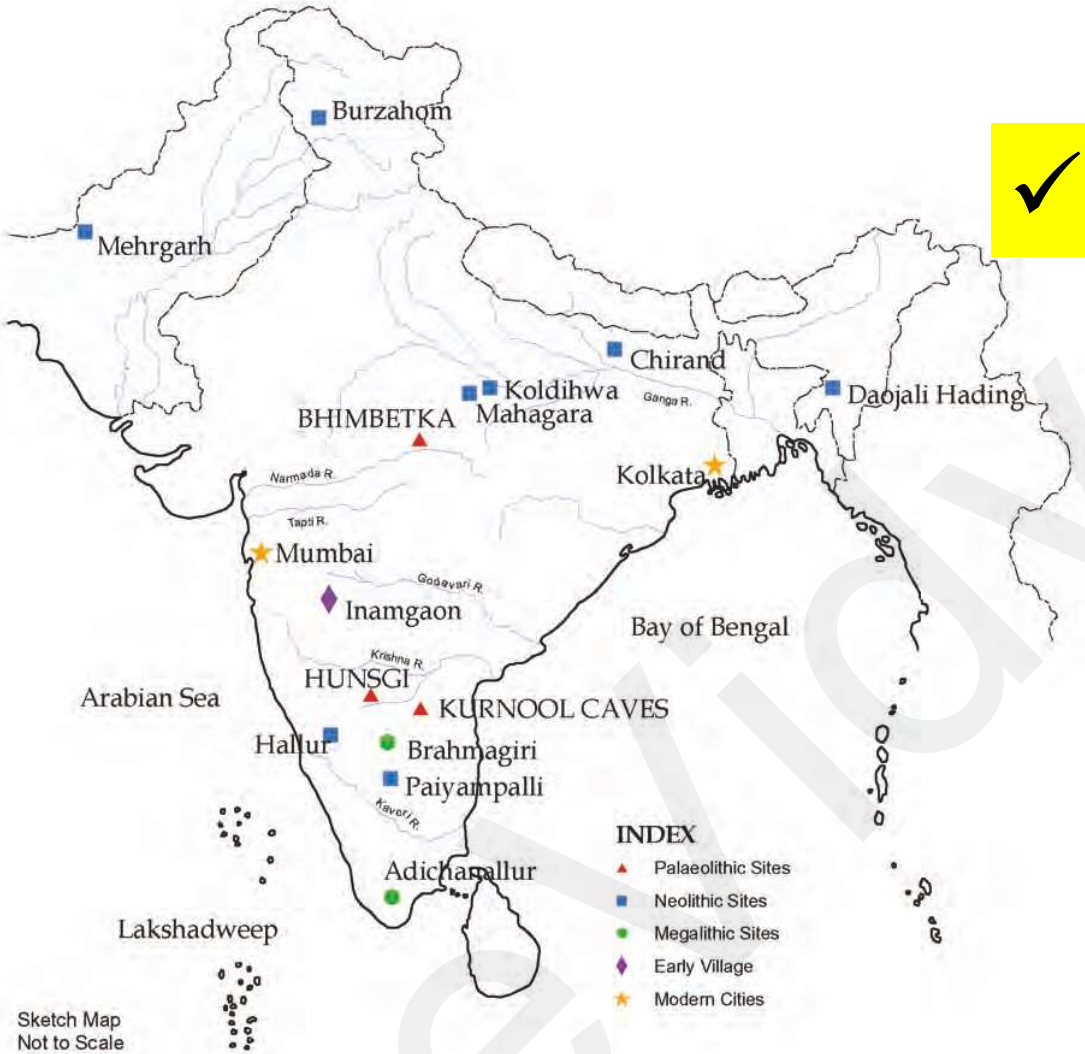

✓ कुछ महत्वपूर्ण पुरास्थल

- भीमबेटका
- हुंग्सी गुफा
- कुर्नूल गुफा

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

शैल चित्रकला: इनसे हमें क्या पता चलता है?

जिन गुफाओं में लोग रहते थे, उनमें से कुछ की दीवारों पर चित्र मिले हैं। इनमें कुछ सुन्दर उदाहरण मध्य प्रदेश और दक्षिणी उत्तर प्रदेश की गुफाओं से मिले चित्र हैं। इनमें जंगली जानवरों का बड़ी कुशलता से सजीव चित्रण किया गया है।

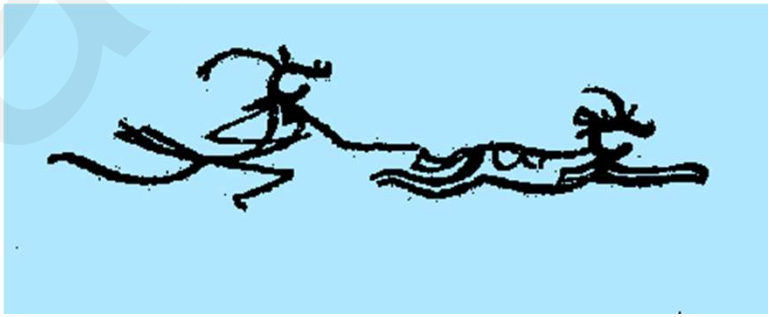

https://www.evidyarthi.in

❑ आग की खोज

www.evidyarthi.in

evidyarthi

www.evidyarthi.in

❑ आग की खोज

•मनुष्य द्वारा की गई सबसे बड़ी खोजों में से एक आग थी।

•आग की खोज सर्वप्रथम कुर्नूल गुफा (आंध्रा प्रदेश) में।

•आग का इस्तेमाल कई चीजों के लिए किया जा सकता था:

www.evidyarthi.in

- ✓ प्रकाश के स्रोत के रूप में,
- ✓ मांस भूनने के लिए और
- ✓ जानवरों को डराने के लिए।

evidyarthi

❖ नाम और तिथियाँ

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

❖ नाम और तिथियाँ

- आरंभिक काल को पुरापाषाण काल कहते हैं।
- पुरापाषाण काल 20 लाख साल पहले से 12,000 साल पहले के दौरान माना जाता है।
- इस काल को भी तीन भागों में विभाजित किया गया है: 'आरंभिक', 'मध्य' एवं 'उत्तर' पुरापाषाण युग।

CLASS VI CH 2 आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक NCERT

www.evidyarthi.in

- मानव इतिहास की लगभग 99 प्रतिशत कहानी इसी काल के दौरान घटित हुई।

https://www.evidyarthi.in

CLASS VI CH 2 आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक NCERT

www.evidyarthi.in

- जिस काल में हमें पर्यावरणीय बदलाव मिलते हैं, उसे 'मेसोलिथ' यानी मध्यपाषाण युग कहते हैं।

- इसका समय लगभग 12,000 साल पहले से लेकर 10,000 साल पहले तक माना गया है।

- इस काल के पाषाण औजार आमतौर पर बहुत छोटे होते थे। इन्हें माइक्रोलिथ यानी लघुपाषाण कहा जाता है।

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

- प्रायः इन औजारों में लकड़ियों एवं हड्डियों के मुट्ठे लगे हँसिया और आरी जैसे औजार मिलते थे।
- साथ-साथ पुरापाषाण युग वाले औजार भी इस दौरान बनाए जाते रहे।
- अगले युग की शुरुआत लगभग 10,000 साल पहले से होती है। इसे नवपाषाण युग कहा जाता है।

https://www.evidyarthi.in

❑ बदलती जलवायु

www.evidyarthi.in

❑ बदलती जलवायु

www.evidyarthi.in

- लगभग 12,000 वर्ष पूर्व विश्व के तापमान में वृद्धि होने लगी थी।
- इससे कई क्षेत्रों में घास के मैदानों का विकास हुआ।
- इससे हिरण, मृग, बकरी, भेड़ और मवेशी, यानी घास पर जीवित रहने वाले जानवरों की संख्या में

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

- लोग खुद इन जानवरों को चराने और पालने के बारे में सोचने लगे।
- मत्स्य पालन भी महत्वपूर्ण हो गया।

https://www.evidyarthi.in

❑खेती और पशुपालन की शुरुआत

www.evidyarthi.in

evidyarthi

❑खेती और पशुपालन की शुरुआत

www.evidyarthi.in

- यह वह समय भी था जब उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में गेहूं, जौ और चावल सहित कई अनाज वाली घास प्राकृतिक रूप से उगाई जाती थी।
- लोगों ने इन खाद्य पदार्थों को इकट्ठा किया और इस प्रक्रिया में सीखा कि वे कहाँ बढ़े, जब वे पक गए।

https://www.evidyarthi.in

CLASS VI CH 2 आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक NCERT

www.evidyarthi.in

- लोग अक्सर अपने पालतू जानवरों और पौधों का चयन करते हैं। पालतू बनाने की यह प्रक्रिया करीब 12,000 साल पहले शुरू हुई थी।

- पालतू होने वाला पहला जानवर कुत्ते का जंगली पूर्वज था।

- वस्तुतः सभी पौधे और पशु उत्पाद जो आज हम खाते हैं, वे पालतू बनाने का परिणाम हैं।

https://www.evidyarthi.in

❑बसने की प्रक्रिया

www.evidyarthi.in

- लोगों द्वारा पौधे उगाने और जानवरों की देखभाल करने को 'बसने की प्रक्रिया' का नाम दिया गया है।
- अपनाए गए ये पौधे तथा जानवर अक्सर जंगली पौधों तथा जानवरों से भिन्न होते हैं। इसकी वजह यह है कि बसने की प्रक्रिया की दिशा में अपनाए गए पौधों या जानवरों का लोग चयन करते हैं।
- उन्हीं जानवरों को आगे प्रजनन के लिए चुना जाता है, जो आमतौर पर अहिंसक होते हैं।

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

- इसलिए हम देखते हैं कि पाले गए जानवर तथा कृषि के लिए अपनाए गए पौधे, जंगली जानवरों तथा पौधों से धीरे-धीरे भिन्न होते गए। मिसाल के तौर पर जंगली जानवरों की तुलना में पालतू जानवरों के दाँत और सींग छोटे होते हैं।

❑एक नवीन जीवन-शैली

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in

❑एक नवीन जीवन-शैली

www.evidyarthi.in

- पौधों को उगाने में समय लगता है, इसलिए जब लोगों ने खेती करना शुरू किया, तो उन्हें एक ही स्थान पर अधिक समय तक रहना पड़ा।
- बीज बोने से लेकर फ़सलों के पकने तक, पौधों की सिंचाई करने, खरपतवार हटाने, जानवरों और चिड़ियों से उनकी सुरक्षा करने जैसे बहुत-से काम शामिल थे ।
- कटाई के बाद, अनाज का उपयोग बहुत संभाल कर करना पड़ता था।

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

✓ जानवर:चलते-फिरते खाद्य-भंडार

- जानवर बच्चे देते हैं जिससे उनकी संख्या बढ़ती है। अगर जानवरों की देखभाल की जाए तो उनकी संख्या तो बढ़ती ही है साथ ही उनसे दूध भी प्राप्त हो सकता है जो भोजन का एक अच्छा स्रोत है।
- यही नहीं जानवरों से हमें मांस भी मिलता है। दूसरे शब्दों में, पशु-पालन भोजन के 'भंडारण' का एक तरीका है।

https://www.evidyarthi.in

❑ आरंभिक कृषकों और पशुपालकों के बारे

www.evidyarthi.in

- पुरातत्वविदों को शुरुआती किसानों और चरवाहों के प्रमाण मिले हैं।
- कुछ सबसे महत्वपूर्ण उत्तर-पश्चिम में, वर्तमान कश्मीर में और पूर्व और दक्षिण भारत में हैं।

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

- यह साबित करने के लिए कि ये बस्तियाँ किसानों और चरवाहों की थीं, वैज्ञानिक पौधों और जानवरों के प्रमाणों का अध्ययन करते हैं।

- वैज्ञानिकों को इन जगहों पर जला हुआ अनाज मिला है। इन अनाजों को गलती से या जानबूझकर जलाया जा सकता था। साथ ही विभिन्न जानवरों की हड्डियाँ भी पाई जाती हैं।

www.evidyarthi.in

- इन खोजों के आधार पर वैज्ञानिक इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में कई फसलें पौधे और जानवर मौजूद थे।

https://www.evidyarthi.in

❑स्थायी जीवन की ओर

www.evidyarthi.in

नवपाषाण युग के कुछ उपकरण।

https://www.evidyarthi.in

❑स्थायी जीवन की ओर

www.evidyarthi.in

पुरातत्वविदों को कुछ स्थलों पर झोपड़ियों या घरों के निशान मिले हैं। उदाहरण के लिए, बुर्जहोम (वर्तमान कश्मीर में) में लोगों ने गड्ढे-घर बनाए, जिन्हें जमीन में खोदा गया था, जिसमें सीढ़ियाँ थीं। ये ठंड के मौसम में आश्रय प्रदान कर सकते हैं।

www.evidyarthi.in

- झोपड़ियों के अंदर और बाहर खाना पकाने के चूल्हे मिले|

- प्रारंभिक युग से उपकरण में अंतर के कारण, जिसे हम पुरापाषाण युग कहते हैं, इस युग को नवपाषाण युग कहा जाता है।

- उसी तरह प्राचीन प्रस्तरयुगीन औजारों का निर्माण और प्रयोग लगातार होता रहा। कुछ औजार हड्डियों से भी बनाए जाते थे।

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

- कई प्रकार के मिट्टी के बर्तन भी मिले हैं।
- इन्हें कभी-कभी सजाया जाता था और चीजों को संग्रहीत करने के लिए उपयोग किया जाता था।
- लोगों ने खाना पकाने के लिए बर्तनों का उपयोग करना शुरू कर दिया, विशेष रूप से चावल, गेहूं और दाल जैसे अनाज जो अब आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं।

https://www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

इसके अलावा, उन्होंने विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग करके कपड़ा बुनाई शुरू की, उदाहरण के लिए कपास, जिसे अब उगाया जा सकता है।

सूक्ष्म-निरीक्षण - मेहरगढ़ में जीवन-मृत्य

www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

सूक्ष्म-निरीक्षण - मेहरगढ़ में जीवन-मृत्य

- मेहरगढ़ नवपाषाण युग का एक महत्वपूर्ण स्थल है।
- यह बोलन दर्रे के पास एक उपजाऊ मैदान में स्थित है, जो ईरान में सबसे महत्वपूर्ण मार्गों में से एक है।
- शायद उन जगहों में से एक जहां लोगों ने जौ और गेहूं उगाना सीखा, और इस क्षेत्र में पहली बार भेड़ और बकरियों का पालन-पोषण किया।

साक्ष्य

www.evidyarthi.in

- हिरण, सुअर, भेड़ और बकरी जैसे जानवरों की हड्डियाँ मिलीं।
- चौकोर या आयताकार घरों के अवशेष, जिनमें चार या अधिक डिब्बे हों, जिनमें से कुछ का उपयोग भंडारण के लिए किया गया हो।
- जीवन के बाद की अवधारणा - मेहरगढ़ में बकरियों जैसे प्रसाद के साथ दफन स्थल पाए गए हैं।

https://www.evidyarthi.in